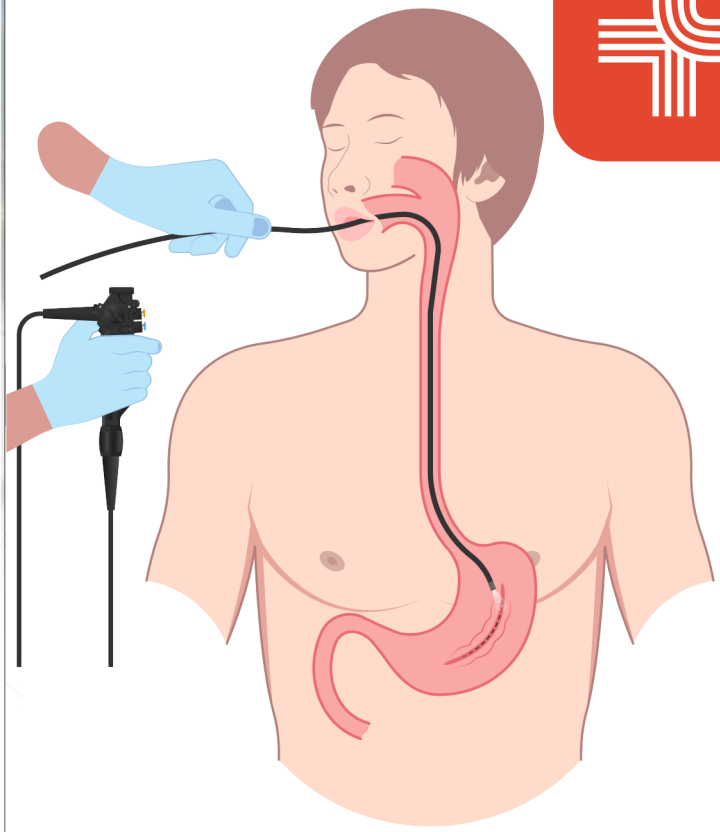

एंडोस्कोपिक रेट्रोग्रेड कोलेंजिओपैनक्रिएटोग्राफी

(ई.आर.सी.पी)

INSTITUTE OF DIGESTIVE AND HEPATOBILIARY SCIENCES

ई.आर.सी.पी क्या है?

एंडोस्कोपिक रेट्रोग्रेड कोलेंजिओपैनक्रिएटोग्राफी जिसे ई.आर.सी.पी भी कहा जाता है, एक मेडिकल प्रक्रिया है जिसका उपयोग लिवर (यकृत), पित्ताशय, बाइल डक्ट्स, और पैंक्रियास की समस्याओं के निदान और उपचार के लिए किया जाता है। इसमें एक्स-रे और एक एंडोस्कोप (एक लम्बी, लचीली, प्रकाश उत्पन करने वाली ट्यूब) का इस्तेमाल होता है।

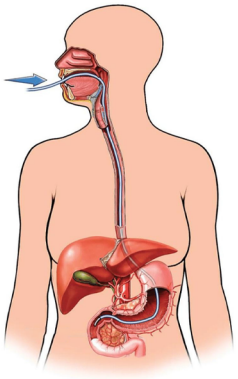

ई.आर.सी.पी की आवश्यकता कब पड़ सकती है?

डॉक्टर निम्नलिखित परिस्थितियों में ई.आर.सी.पी की सलाह दे सकते हैं:

- ऐसा पेट दर्द जिसका कारण अज्ञात हो
- आँखों और त्वचा में पीलापन (पीलिया) दिखना
- लिवर, पैंक्रियास या बाइल डक्ट का कैंसर
- बाइल डक्ट में स्टोन या अन्य रुकावट
- पित्त या पैंक्रिएटिक नली से द्रव का रिसाव, पैंक्रिएटिक डक्ट्स की रुकावट या इनका सिकुड़ना
- पैंक्रियाटाइटिस या बाइल डक्ट में संक्रमण

ई.आर.सी.पी के पहले किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

ई.आर.सी.पी से पहले निम्नलिखित सावधानियां बरतनी चाहिए:

- सबसे पहले मरीज़ को आभूषण या प्रक्रिया में बाधा डालने वाली अन्य वस्तुओं को हटाना चाहिए।
- किसी भी प्रकार की दवा, आयोडीन या डाई से एलर्जी के बारे में डॉक्टर को अवगत कराएं।
- मरीज़ को प्रक्रिया से आठ घंटे पहले भोजन या पानी का सेवन न करने की सलाह दी जाती है।
- मरीज़ को गर्भावस्था के बारे में डॉक्टर को अवश्य बताना चाहिए। यदि मरीज़ कोई दवा ले रहे हों तो उसे भी डॉक्टर को बताएं।
- यदि मरीज़ को अन्य बीमारियाँ जैसे हृदय रोग या शुगर है तो डॉक्टर को इनके बारे में जानकारी दें।

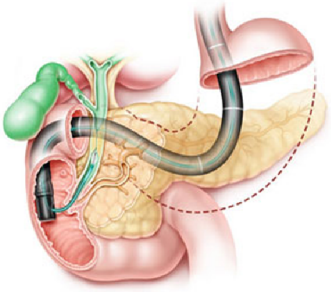

ई.आर.सी.पी के दौरान क्या होता है?

ई.आर.सी.पी अस्तपाल में होने वाली एक आम प्रक्रिया है।

- प्रक्रिया के लिए मरीज़ को एक विशेष गाउन दिया जाता है।
- एक इंट्रावेनस (आई.वी) लाइन आपकी कलाई या हाथ में लगाई जाती है।

- मरीज़ को एक्स-रे टेबल पर पेट के बल लिटाया जाता है।
- डॉक्टर मरीज़ के गले को एनेस्थीसिया से सुन्न करने के बाद एण्डोस्कोप को धीरे-धीरे भोजन नली, पेट और छोटी आंत के ऊपरी हिस्से से होते हुए बाइल डक्ट तक ले जाते हैं।
- एक छोटी सी ट्यूब एंडोस्कोप के माध्यम से बिलियरी ट्री तक पहुंचाई जाती है फिर इसके बाद कंट्रास्ट डाई को डक्ट तक पहुँचा कर डॉक्टर बिलियरी ट्री और पैक्रेटिक डक्ट के विभिन्न कोणों से एक्स-रे लेते हैं।
- इसके पश्चात एण्डोस्कोप को वापिस निकाल लिया जाता है।

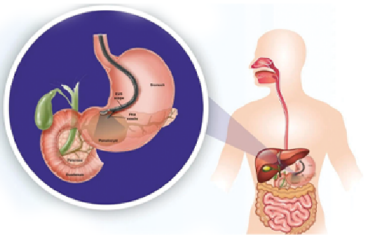

ई.आर.सी.पी के बाद क्या होता है?

ई.आर.सी.पी के बाद डॉक्टर मरीज़ को ब्लड प्रेशर और पल्स नार्मल होने तक रिकवरी कक्ष में रखते हैं। गले का सुन्नपन कम होने तक मरीज़ को कुछ खाने या पीने से रोका जाता है। कई बार मरीज़ को रेक्टल सपोसिटरी दी जा सकती है जिससे पैंक्रियाटाइटिस की सम्भावना को कम किया जा सके। मरीज़ को उसी दिन घर भेजा जा सकता है या एक रात के लिए रुकने को कहा जा सकता है।

ई.आर.सी.पी में क्या जोखिम हो सकते हैं?

ई.आर.सी.पी के संभावित जोखिम निम्नलिखित हैं:

- पैंक्रियास की सूजन
- पित्ताशय की सूजन या संक्रमण
- रक्तस्राव
- छोटी आंत के ऊपरी हिस्से, भोजन नली या पेट में चोट
- पित्त का बिलियरी सिस्टम के बाहर इकट्ठा होना

किन परिस्थितियों में तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें?

अगर निम्नलिखित में से कोई भी लक्षण महसूस हो तो तुरंत डॉक्टर को सूचित करें:

- बुखार या ठंड लगना
- आईवी स्थान में सूजन या रक्तस्राव
- पेट का दर्द, मतली, या उल्टियाँ
- काले या खूनी दस्त
- निगलने में कठिनाई
- गले या सीने में दर्द जो समय के साथ बढ़ रहा है

24/7 सेवा

मेदांता **24X7**
आपातकालीन हेल्पलाइन

1068

अपॉइंटमेंट बुक करने
के लिए स्कैन करें

medanta हेल्पलाइन
890-439-5588
Visit us at : www.medanta.org

मेदांता नेटवर्क: गुरुग्राम । दिल्ली । लखनऊ । पटना । इंदौर । रांची । नोएडा *
शीघ्र प्रारम्भ